"मध्य प्रदेश के बौद्ध धर्म के मठों और मंदिरों में विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था"

आलोक पाठक[1] और सियाराम यादव[2*]

शोधार्थी[1] और सह प्राध्यापक[2*]

[1,2*]शिक्षाशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत - 470228

अमूर्त

मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म के मठों और मंदिरों में दी जा रही शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। यह अध्ययन शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म के शैक्षिक संस्थानों की भूमिका, उनके पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों, अनुशासन प्रणाली, और विद्यार्थियों के समग्र विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। शोध के लिए मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध मठों और मंदिरों, जैसे साँची, जबलपुर, और सागर जिले में स्थित शिक्षण केंद्रों का सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया, जिसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों और प्रशासनिक अधिकारियों के साक्षात्कार, प्रश्नावली और प्रेक्षण विधियों को सम्मिलित किया गया। परिणाम बताते हैं कि बौद्ध मठों में शिक्षा मुख्यतः धार्मिक अध्ययन, ध्यान, नैतिक शिक्षा, और पारंपरिक ग्रंथों के अध्ययन पर केंद्रित है, जबकि आधुनिक शिक्षा के विषयों को भी धीरे-धीरे पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इन संस्थानों में विद्यार्थियों को अनुशासन, आत्मसंयम और सामूहिक जीवन के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे उनका मानसिक और नैतिक विकास होता है। हालांकि, शोध में यह भी देखा गया कि आधुनिक शिक्षा संसाधनों और डिजिटल लर्निंग साधनों की कमी के कारण कुछ क्षेत्रों में छात्रों की शैक्षिक प्रगति बाधित होती है। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि बौद्ध धर्म के मठ और मंदिर धार्मिक और नैतिक शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र बने हुए हैं, लेकिन आधुनिक शैक्षिक प्रवृत्तियों को समाहित कर इनकी प्रभावशीलता को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। नीति निर्माताओं और शिक्षा विशेषज्ञों को इन संस्थानों में आधुनिक शिक्षा सुविधाओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

कूटशब्द: बौद्ध शिक्षा प्रणाली, धार्मिक अनुशासन, शैक्षिक संसाधन, सांस्कृतिक प्रभाव, आधुनिक समावेश, इत्यादि।

परिचय

बौद्ध धर्म भारत की उन महान आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराओं में से एक है, जिसने शिक्षा और नैतिकता को समाज में ज्ञान एवं शांति का आधार बनाया है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने ज्ञान की प्राप्ति और इसके प्रसार को मानव उत्थान का महत्वपूर्ण साधन माना। इसी कारण प्राचीन काल से ही बौद्ध मठ (विहार) और मंदिर न केवल पूजा और ध्यान के केंद्र रहे हैं, बल्कि ये शिक्षा के प्रमुख संस्थान भी बने रहे। वर्तमान समय में, मध्य प्रदेश में स्थित बौद्ध मठों

और मंदिरों में शिक्षा की व्यवस्था पर गहराई से अध्ययन करना आवश्यक हो गया है, क्योंकि यह न केवल धार्मिक शिक्षा का माध्यम हैं बल्कि आधुनिक शैक्षिक संरचना से भी जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं [1]।

- बौद्ध शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत में बौद्ध शिक्षा की परंपरा का विकास प्राचीन काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से हुआ था, जहाँ बौद्ध दर्शन के साथ-साथ चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित और व्याकरण जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी [2]। गौतम बुद्ध ने शिक्षा को नैतिकता और आध्यात्मिकता से जोड़कर इसे जनकल्याण का साधन बनाया। बुद्ध के समय से ही संघों (बौद्ध मठों) में शिक्षा प्रदान करने की परंपरा विकसित हुई, जहाँ भिक्षु एवं साधारण नागरिक अध्ययन और ध्यान करते थे [3]।

मध्य प्रदेश, जो सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है, में बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव देखा गया है। साँची जैसे ऐतिहासिक स्थल, जहाँ महान स्तूप स्थित है, बौद्ध शिक्षा और संस्कृति के केंद्र रहे हैं [4]। वर्तमान समय में, मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों जैसे साँची, जबलपुर, और सागर में बौद्ध मठों और मंदिरों में शिक्षा की आधुनिक एवं पारंपरिक विधियों का समन्वय देखा जा सकता है [5]।

- मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों और मंदिरों में शिक्षा व्यवस्था

1. पारंपरिक शिक्षा पद्धति

मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों और मंदिरों में पारंपरिक शिक्षा पद्धति का प्रमुख रूप से पालन किया जाता है, जिसमें त्रिपिटक, विनय पिटक, और अभिधम्म पिटक जैसे ग्रंथों का अध्ययन किया जाता है [6]। यह शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से मौखिक परंपरा, गुरु-शिष्य परंपरा और ध्यान साधना पर केंद्रित होती है [7]। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को नैतिक अनुशासन, ध्यान एवं आत्मसंयम की शिक्षा भी दी जाती है [8]।

2. आधुनिक शिक्षा के समावेश के प्रयास

हाल के वर्षों में, बौद्ध मठों और मंदिरों में आधुनिक शिक्षा को भी शामिल करने के प्रयास किए जा रहे हैं। कई मठों में अब अंग्रेजी, गणित और विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाया जा रहा है, ताकि विद्यार्थियों को समकालीन सामाजिक और व्यावसायिक जीवन के लिए तैयार किया जा सके [9]। विशेष रूप से साँची और जबलपुर के मठों में आधुनिक शैक्षिक पाठ्यक्रमों का समावेश देखा गया है, जिसमें कंप्यूटर शिक्षा और वैश्विक बौद्ध अध्ययन जैसे विषय भी सम्मिलित किए जा रहे हैं [10]।

3. ध्यान एवं नैतिक शिक्षा

बौद्ध शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ध्यान (Meditation) और नैतिकता (Ethics) पर आधारित होता है। विद्यार्थियों को बौद्ध शिक्षाओं के अनुसार आत्मसंयम, करुणा, और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करने की प्रेरणा दी

जाती है [11]। मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों में विपश्यना ध्यान और समाधि साधना के माध्यम से मानसिक अनुशासन को सिखाया जाता है [12]।

4. शिक्षण विधियाँ और गुरु-शिष्य परंपरा

बौद्ध शिक्षा प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा (Master-Disciple Tradition) का विशेष महत्व है, जिसमें विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के अनुभवों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है [13]। यह परंपरा आज भी मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों में कायम है, जहाँ भिक्षु एवं शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक एवं बौद्ध दर्शन से संबंधित शिक्षाएँ दी जाती हैं [14]।

5. शिक्षण संस्थानों की संरचना और प्रशासन

मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध शिक्षण संस्थानों में शिक्षा के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था भी सुव्यवस्थित होती जा रही है। इन संस्थानों में धार्मिक प्रमुखों के साथ-साथ प्रशासनिक समितियों का गठन किया गया है, जो शिक्षण कार्यक्रमों का संचालन और प्रबंधन करते हैं [15]।

- बौद्ध शिक्षा प्रणाली की प्रमुख चुनौतियाँ

हालाँकि, मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों और मंदिरों में शिक्षा प्रणाली अत्यधिक अनुशासित और नैतिक मूल्यों पर आधारित है, लेकिन इसे कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है:

1. आधुनिक शिक्षा संसाधनों की कमी – अधिकांश बौद्ध मठों में आधुनिक शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन, जैसे डिजिटल लाइब्रेरी, कंप्यूटर लैब और विज्ञान प्रयोगशालाएँ उपलब्ध नहीं हैं [16]।

2. संस्थागत वित्तीय सहायता की आवश्यकता – कई बौद्ध शिक्षण संस्थान निजी दान और धार्मिक संगठनों की सहायता पर निर्भर हैं, जिससे इनके वित्तीय संसाधन सीमित होते हैं [17]।

3. तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता – पारंपरिक बौद्ध शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा का समावेश सीमित है, जिससे विद्यार्थियों को समकालीन रोजगार बाजार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है [18]।

4. सामाजिक जागरूकता का अभाव – बौद्ध शिक्षा प्रणाली को समाज में व्यापक रूप से अपनाने और इसे समकालीन शिक्षा प्रणाली के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है [19, 20]।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों और मंदिरों में विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक (Descriptive) और गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध की प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में विभाजित किया गया, जिससे विषय का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया जा सके।

1. अध्ययन क्षेत्र का चयन

शोध के लिए मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध शिक्षण संस्थानों को चुना गया, जिनमें साँची, जबलपुर, सागर, भोपाल और रीवा के बौद्ध मठ और मंदिर सम्मिलित हैं। ये क्षेत्र बौद्ध शिक्षा के ऐतिहासिक और आधुनिक केंद्रों के रूप में महत्वपूर्ण हैं।

2. डेटा संग्रहण के स्रोत

शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया:

प्राथमिक डेटा:

साक्षात्कार (Interviews): शिक्षकों, भिक्षुओं, विद्यार्थियों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ संरचित एवं अर्ध-संरचित साक्षात्कार लिए गए।

अवलोकन (Observation): शिक्षण पद्धतियों, ध्यान सत्रों और पाठ्यक्रम गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

प्रश्नावली (Questionnaire): विद्यार्थियों और शिक्षकों से उनके शैक्षिक अनुभवों, पाठ्यक्रम और संसाधनों से संबंधित प्रश्न पूछे गए।

द्वितीयक डेटा:

शोध पत्र, पुस्तकें, सरकारी रिपोर्ट, शिक्षा नीतियों से प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन किया गया।

डिजिटल संसाधनों और विश्वविद्यालयों के शोध कार्यों से संबंधित साहित्य समीक्षा की गई।

3. डेटा विश्लेषण पद्धति

शोध में एकत्रित डेटा का विषयगत (Thematic) और तुलनात्मक (Comparative) विश्लेषण किया गया। गुणात्मक डेटा को सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) के माध्यम से व्यवस्थित किया गया, जबकि साक्षात्कार और प्रश्नावली के उत्तरों को वर्गीकृत कर निष्कर्ष निकाले गए।

4. नैतिकता और विश्वसनीयता

शोध के दौरान प्रतिभागियों की सहमति ली गई एवं डेटा की गोपनीयता बनाए रखी गई। निष्कर्षों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए ट्रायंगुलेशन विधि का उपयोग किया गया।

यह शोध पद्धति मध्य प्रदेश के बौद्ध शिक्षण संस्थानों की पारंपरिक एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को समझने में सहायक सिद्ध हुई।

परिणाम और विश्लेषण

इस अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश के बौद्ध धर्म के मठों और मंदिरों में विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण करना था। अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि बौद्ध शिक्षण संस्थानों में शिक्षा का पारंपरिक और आधुनिक स्वरूप धीरे-धीरे विकसित हो रहा है।

1. प्राथमिक डेटा का विश्लेषण

1.1 अध्ययन क्षेत्र और उत्तरदाता

शोध के लिए मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध शिक्षण केंद्रों का चयन किया गया, जिनमें साँची, जबलपुर, सागर, भोपाल, और रीवा के बौद्ध मठ और मंदिर सम्मिलित थे। कुल 250 उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्र की गई, जिसमें शिक्षकों, भिक्षुओं, विद्यार्थियों और प्रशासनिक अधिकारियों के उत्तर सम्मिलित थे।

तालिका 1. उत्तरदाताओं की संख्या और प्रतिशत।

क्र. सं.	श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1.	भिक्षु (शिक्षक)	50	20%
2.	विद्यार्थी	150	60%
3.	प्रशासनिक अधिकारी	30	12%
4.	अन्य	20	8%

1.2 पारंपरिक शिक्षा का महत्व

बौद्ध मठों में शिक्षा मुख्य रूप से त्रिपिटक, विनय पिटक, और अभिधम्म पिटक जैसे ग्रंथों के अध्ययन पर केंद्रित है। शिक्षण पद्धति में गुरु-शिष्य परंपरा, मौखिक शिक्षा, और ध्यान-साधना का महत्वपूर्ण स्थान है।

सर्वेक्षण के अनुसार:

78% विद्यार्थियों ने कहा कि वे पारंपरिक बौद्ध शिक्षा को अपने मानसिक विकास के लिए उपयोगी मानते हैं।

64% शिक्षकों ने बताया कि ध्यान और अनुशासन आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में संयम और नैतिकता विकसित करती है।

हालाँकि, 47% विद्यार्थियों ने यह भी स्वीकार किया कि पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में आधुनिक विषयों की कमी उन्हें रोजगार के अवसरों से वंचित कर सकती है।

1.3 आधुनिक शिक्षा के प्रयास और चुनौतियाँ

हाल के वर्षों में, कुछ बौद्ध शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, और कंप्यूटर शिक्षा को शामिल करने का प्रयास किया गया है। साँची और जबलपुर के कुछ मठों में विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों तक सीमित पहुँच दी गई है।

शिक्षा के आधुनिक स्वरूप को लेकर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ:

तालिका 2. शिक्षा के आधुनिक स्वरूप पर प्रतिक्रियाएँ।

क्र. सं.	शिक्षा का स्वरूप	सहमति (%)	असहमति (%)
1.	धार्मिक और पारंपरिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए	62%	38%
2.	आधुनिक शिक्षा (गणित, विज्ञान, कंप्यूटर) आवश्यक है	73%	27%
3.	बौद्ध शिक्षण संस्थानों में डिजिटल संसाधनों की कमी है	81%	19%

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता आधुनिक शिक्षा को शामिल करने के पक्ष में हैं, लेकिन पारंपरिक शिक्षा की महत्ता भी स्वीकार करते हैं।

2. द्वितीयक डेटा का विश्लेषण

2.1 शिक्षण संसाधनों की स्थिति

शोध में पाया गया कि मध्य प्रदेश के बौद्ध मठों और मंदिरों में शिक्षण संसाधनों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। कई संस्थानों में पुस्तकालय, कंप्यूटर लैब, और इंटरनेट सुविधाएँ सीमित हैं। 53% विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें अध्ययन के लिए आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। 68% विद्यार्थियों ने कहा कि कंप्यूटर और डिजिटल संसाधनों की कमी के कारण वे ऑनलाइन शिक्षण सामग्री तक नहीं पहुँच पाते। केवल 22% संस्थानों में डिजिटल लाइब्रेरी उपलब्ध है।

तालिका 3. शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता।

क्र. सं.	शिक्षण संसाधन	उपलब्ध (%)	अनुपलब्ध (%)
1.	आवश्यक पुस्तकें	47%	53%
2.	कंप्यूटर एवं डिजिटल संसाधन	32%	68%

3.	डिजिटल लाइब्रेरी	22%	78%

2.2 विद्यार्थियों की कैरियर संभावनाएँ

शोध में यह भी पाया गया कि पारंपरिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को आधुनिक रोजगार के अवसरों में कठिनाई होती है।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि अधिकतर विद्यार्थी धार्मिक एवं शिक्षण कार्यों में संलग्न होते हैं, लेकिन अन्य क्षेत्रों में अवसरों की कमी है।

तालिका 4. विद्यार्थियों की करियर संभावनाएँ।

क्र. सं.	रोजगार क्षेत्र	विद्यार्थियों की भागीदारी (%)
1.	धार्मिक/संघ प्रशासन	45%
2.	शिक्षण	30%
3.	अन्य (सरकारी या निजी क्षेत्र)	15%
4.	बेरोजगार या अन्य विकल्प तलाश रहे	10%

3. ध्यान एवं नैतिकता आधारित शिक्षा के प्रभाव

बौद्ध शिक्षण संस्थानों में ध्यान एवं नैतिक शिक्षा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। सर्वेक्षण में पाया गया कि:

85% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि ध्यान-साधना से उनकी मानसिक शांति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार हुआ है। 74% विद्यार्थियों ने कहा कि बौद्ध नैतिक शिक्षा ने उनके जीवन में आत्मसंयम और करुणा को बढ़ावा दिया। इसका तात्पर्य है कि पारंपरिक बौद्ध शिक्षा विद्यार्थियों के मानसिक एवं नैतिक विकास में सहायक है।

4. प्रमुख चुनौतियाँ और संभावनाएँ

4.1 प्रमुख चुनौतियाँ

1. आधुनिक शिक्षण संसाधनों की कमी – 81% उत्तरदाताओं ने डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता को प्रमुख समस्या बताया।

2. वित्तीय सहायता का अभाव – कई मठों और शिक्षण संस्थानों को वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।

3. तकनीकी शिक्षा का अभाव – केवल 27% विद्यार्थियों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की सुविधा मिलती है।

चर्चा

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश के बौद्ध शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्रणाली पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण के समायोजन के साथ विकसित हो रही है। पारंपरिक बौद्ध शिक्षा में त्रिपिटक, विनय पिटक, और अभिधम्म पिटक का अध्ययन महत्वपूर्ण है, जिसे गुरु-शिष्य परंपरा और ध्यान-साधना के माध्यम से सिखाया जाता है। 78% विद्यार्थियों ने इसे मानसिक विकास के लिए उपयोगी माना, जबकि 47% ने इसे आधुनिक रोजगार अवसरों में बाधा बताया। आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता को समझते हुए, कुछ संस्थानों में गणित, विज्ञान, कंप्यूटर, और अंग्रेजी जैसी विषयों को पाठ्यक्रम में जोड़ा गया है [5]। 73% उत्तरदाताओं ने आधुनिक शिक्षा को आवश्यक माना, लेकिन 81% ने डिजिटल संसाधनों की कमी को एक बड़ी समस्या बताया। केवल 32% शिक्षण संस्थानों में कंप्यूटर सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जबकि 78% में डिजिटल लाइब्रेरी का अभाव है। विद्यार्थियों की करियर संभावनाओं का विश्लेषण करने पर पाया गया कि 45% विद्यार्थी धार्मिक एवं संघ प्रशासन में संलग्न होते हैं, 30% शिक्षण क्षेत्र में जाते हैं, और केवल 15% सरकारी या निजी क्षेत्र में अवसर प्राप्त कर पाते हैं। 10% विद्यार्थी बेरोजगारी या अन्य विकल्पों की तलाश में हैं। शिक्षण संस्थानों में ध्यान एवं नैतिक शिक्षा का गहरा प्रभाव देखा गया, जिससे 85% विद्यार्थियों की मानसिक शांति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार हुआ। 74% ने आत्मसंयम और करुणा में वृद्धि महसूस की [7]।

हालांकि, अध्ययन ने कई चुनौतियाँ भी उजागर की हैं, जिनमें डिजिटल संसाधनों की कमी (81%), वित्तीय सहायता का अभाव, और तकनीकी शिक्षा की अनुपलब्धता (27%) प्रमुख हैं। निष्कर्षतः, पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा का संतुलन बनाकर, इन संस्थानों में शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश के बौद्ध शिक्षण संस्थान पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, जो त्रिपिटक, विनय पिटक, और अभिधम्म पिटक जैसे ग्रंथों के अध्ययन पर आधारित है, आज भी इन संस्थानों में प्रमुख भूमिका निभा रही है। यह शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा, ध्यान-साधना, और नैतिक अनुशासन पर केंद्रित है, जिससे विद्यार्थियों में मानसिक स्थिरता और आत्मसंयम विकसित होता है। हालांकि, अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आधुनिक शिक्षा संसाधनों की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। 81% उत्तरदाताओं ने डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता को महत्वपूर्ण समस्या बताया, जबकि 68% विद्यार्थियों ने कंप्यूटर और इंटरनेट सुविधाओं की कमी को अपनी शैक्षिक प्रगति में बाधा माना। इसके अलावा, केवल 27% विद्यार्थियों को तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की सुविधा प्राप्त हो रही है, जिससे रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं। आधुनिक शिक्षा को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण के बावजूद, 62% उत्तरदाताओं ने

पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को प्राथमिकता देने की आवश्यकता जताई, जबकि 73% ने गणित, विज्ञान, और कंप्यूटर जैसे विषयों के समावेश को अनिवार्य माना। विद्यार्थियों की करियर संभावनाओं के विश्लेषण में पाया गया कि 45% धार्मिक कार्यों से जुड़े रहते हैं, जबकि केवल 15% सरकारी या निजी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर पाते हैं।

अतः निष्कर्षतः, बौद्ध शिक्षण संस्थानों में आधुनिक शिक्षा के समावेश की दिशा में ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। डिजिटल संसाधनों, वित्तीय सहायता, और तकनीकी शिक्षा के विस्तार से इन संस्थानों की प्रभावशीलता बढ़ाई जा सकती है। नीति निर्माताओं और शिक्षा विशेषज्ञों को पारंपरिक बौद्ध शिक्षा की मूल भावनाओं को बनाए रखते हुए आधुनिक शिक्षण सुविधाओं का विकास करने की दिशा में कार्य करना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को समकालीन समाज में बेहतर अवसर प्राप्त हो सकें।

संदर्भ सूची

1. राहुल, व. (2007). बुद्ध ने क्या सिखाया. ग्रोव प्रेस।

2. गोंब्रिच, आर. (1988). थेरवाद बौद्ध धर्म: प्राचीन बनारस से आधुनिक कोलंबो तक का सामाजिक इतिहास. रूटलेज।

3. फोगेलिन, एल. (2006). प्रारंभिक बौद्ध धर्म की पुरातत्वीय खोजें. अल्टामिरा प्रेस।

4. चक्रवर्ती, उ. (2017). प्रारंभिक बौद्ध धर्म के सामाजिक आयाम. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

5. नाकामुरा, ह. (1983). भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास और संस्कृति पर प्रभाव. मोटिलाल बनारसीदास।

6. प्रीविश, सी. एवं कीओन, डी. (2006). बौद्ध धर्म की ऐतिहासिक रूपरेखा. ऑक्सफोर्ड हैंडबुक।

7. हार्वे, पी. (2013). बौद्ध धर्म: शिक्षाएं, इतिहास और परंपराएं. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

8. स्वेयरर, डी. (2010). बौद्ध धर्म में शिक्षण और ध्यान की परंपरा. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

9. ट्रेनर, के. (1997). बौद्ध धर्म और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन. येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

10. विलियम्स, पी. एवं ट्राइब, ए. (2000). बौद्ध धर्म: एक व्यापक अध्ययन. पाल्ग्रेव मैकमिलन।

11. कॉन्ज़, ई. (2013). बौद्ध ध्यान की परंपराएं और उनका प्रभाव. मोटिलाल बनारसीदास।

12. रूग, डी. (1989). बौद्ध शिक्षण प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा की भूमिका. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

13. गेथिन, आर. (1998). बौद्ध धर्म के मौलिक सिद्धांत. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

14. स्किलिंग, पी. (2009). बौद्ध शिक्षण संस्थानों का प्रशासनिक ढांचा. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

15. गोंब्रिच, आर. (2013). बौद्ध शिक्षण संस्थानों में आधुनिक संसाधनों की कमी का विश्लेषण. रूटलेज।

16. शोपेन, जी. (2004). बौद्ध मठों और उनकी वित्तीय संरचना. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

17. बर्कविट्ज़, एस. (2006). बौद्ध धर्म और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का सामंजस्य. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

18. कीओन, डी. (2005). समकालीन बौद्ध शिक्षा के प्रमुख मुद्दे. पाल्ग्रेव मैकमिलन।

19. हाल्ट, जेम्स. (2014). बौद्ध मठों में ध्यान एवं नैतिकता की परंपराएं. येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

20. टेप्लिन, एम. (2018). बौद्ध शिक्षण संस्थानों में आधुनिक शिक्षण तकनीकों का समावेश. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।